इकाई 5 विकास : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देष्य

5.3 बच्चे और बाल्यावस्था की धारणाओं का परिचय

5.3.1 एक अध्यापक को इन अवधारणाओं को समझने की क्यों आवष्यकता है?

5.3.2 बच्चे और बाल्यावस्था की धारणाएँ

5.4 विकास की प्रक्रिया को समझना : बाल विकास

5.4.1 अध्यापकों हेतु प्रासंगिकता

5.4.2 बाल विकास का अर्थ

5.4.3 विकास के विभिन्न पहलू/आयाम

5.4.4 वृद्धि एवं विकास में अंतर

5.5 बाल विकास को समझने की विधियाँ

5.5.1 जीवन में विकास – अवस्थाएँ

5.5.2 सातत्य और सर्पिल प्रक्रिया के रूप में विकास

5.6 विकास के बारे में परिचर्चा

5.7 विकास के बारे में कुछ सामान्य जानकारियाँ

5.8 सारांष

5.9 इकाई के अंत में अभ्यास

5.10 बोध प्रष्नों के उत्तर

5.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

एक अध्यापक/अध्यापिका के रूप में आप बच्चों के साथ अध्यापन–अध्ययन प्रक्रियाओं में लगे हैं। आप उनके बारे में अनेक वस्तुओं का अवलोकन करेंगे और आपने यह अवलोकन किया भी होगा कि उनकी वृद्धि किस प्रकार होती है और इसके साथ ही आपने उनके जीवन तथा अनुभवों के बारे में अधिक जानने की आवष्यकता भी महसूस की होगी। इस इकाई में, हम इस संबंध में एक जानकारी विकसित करने की शुरुआत करने का प्रयास करेंगे। यह इकाई आपको बाल्यावस्था (बचपन) अर्थात जीवन के प्रारंभिक वर्षों और बाल्यावस्था तथा एक बच्चे के रूप में होने के अर्थ के विषय में परिचित कराएगी। इस इकाई को पढ़ते समय, आप उन बच्चों के बारे में सोचें जिनके साथ आप दैनिक षिक्षण अभ्यास में अंतःक्रिया करते हैं, जिन्हें आप विद्यालय के बाहर देखते हैं और अपनी बाल्यावस्था पर विचार करते हैं, इनसे आपको इकाई में प्रस्तुत की गई अवधारणाओं और विचारों का अर्थ समझने में सहायता मिलेगी।

5.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के पष्चात आपः

- बच्चे और बाल्यावस्था की अवधारणा का वर्णन, चर्चा और विचार–विमर्ष कर सकेंगे;
- बाल विकास (child development) की अवधारणा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे;
- वृद्धि (growth), विकास (development) और अधिगम (learning) शब्दों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विकास का विश्लेषण करने के विभिन्न तरीकों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विकास के बारे में कुछ विचारों से परिचित हो सकेंगे; और
- अध्यापक/अध्यापिकाओं के रूप में बच्चों से हमारे संबंधों पर प्रकाष डाल सकेंगे।

5.3 बच्चे और बाल्यावस्था की धारणाओं का परिचय

5.3.1 एक अध्यापक को इन अवधारणाओं को समझने की क्यों आवष्यकता है?

बच्चा और बाल्यावस्था हम सबके लिए सर्वाधिक परिचित शब्द प्रतीत होते हैं। हम सब भी उस उम्र में रहे हैं जब हमें बच्चे कहा जाता था और हमने उस चरण (phase) को अनुभव किया जिसे बाल्यावस्था कहा गया। हम अपने घरों और बच्चों को देखते हैं और उनका अवलोकन करते हैं। यह प्रतीत होता है कि हम सभी को बच्चों और बाल्यावस्था की कुछ जानकारी होगी। आइए, कुछ स्थितियों के बारे में विचार करें।

आषा, पाँचवी कक्षा की अध्यापिका है। हाल ही में उसने अध्यापिका के रूप में कार्यभार संभाला है। वह महसूस करती है कि उसकी कक्षा में अधिकतर बच्चे खेलना पसंद करते हैं और चुस्त हैं। वे अपने दैनिक मुद्दों का समाधान करने में बहुत होषियार दिखाई देते हैं। परंतु कक्षाकक्ष में अधिकतर बच्चे परेषान दिखाई देते हैं। वे या तो पूरी तरह चुप रहते हैं, पानी पीने या शौचालय जाने के लिए हमेषा बाहर जाना चाहते हैं अथवा कुछ अध्यापक से कुछ पूछते हैं। आषा ने कुछ विद्यार्थियों यहाँ तक कि अध्यापकों से भी इसके बारे में पूछा। परंतु स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। आषा इस स्थिति को समझने में असफल रही है। यदि आप आषा के स्थान पर होते तो आप ऐसी स्थिति में क्या करते? यदि आप उसकी (आषा) कक्षा में विद्यार्थी होते, तो आप अपनी स्थिति को किस प्रकार स्पष्ट करते?

सरोज पहली कक्षा की अध्यापिका है। उसका अधिकांष दिन बच्चों को उनकी सीटों पर बिठाने में चला जाता है। बच्चे उसकी नहीं सुनते। उनमें से सभी उसके पास ऐसी ही समस्याओं के साथ आते हैं। वे छोटी–छोटी चीजों के बारे में प्रष्न पूछते हैं। वे कभी–कभी स्वयं से बाते करते हैं और कुछ कार्य करते समय चीजों को दोहराते हैं। वे निर्देषों का पालन करने में इसे कठिन पाते हैं। क्या यह केवल सरोज की स्थिति है अथवा क्या आप सोचते हैं कि क्या अध्यापक ऐसी कक्षाकक्ष स्थितियों में कार्य कर रहे होंगे? आप क्यों सोचते हैं कि ऐसा हो रहा है?

समीन राजकीय कन्या विद्यालय में चौथी कक्षा को पढ़ाती है। निकटवर्ती झोपड़–बस्ती के बच्चे कक्षाओं में नामांकन कराते हैं। वह विद्यार्थियों के इस समूह की तभी से अध्यापिका रही है जबसे उनका पहली कक्षा में नामांकन हुआ है। उसे लग रहा है कि उसकी कक्षा

की अनेक लड़कियाँ उनकी आयु के अन्य बच्चों से कमजोर हैं। उसने यह भी महसूस किया है कि उनमें से कुछ बच्चे अपनी आयु के अनुसार अधिक लंबे नहीं हैं और कुछ बच्चों की दृष्टि कमजोर है। उन्होंने क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में कार्य कर रहे अन्य अध्यापकों के साथ इसकी चर्चा की। समीन पाती है कि सुविधावंचित क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालयों में कार्य कर रहे अधिकतर अध्यापकों ने इसी प्रकार के मुद्दों का अवलोकन किया है। वह इस स्थिति को बेहतर ढंग से समझना चाहती है। उसे मामले का किस प्रकार अध्ययन करना चाहिए, इस संबंध में आप क्या सुझाव देंगे?

उपर्युक्त स्थितियाँ असामान्य मामले नहीं हैं। अधिकतर अध्यापक ऐसी स्थितियों में कार्य करते हैं और अपने ढंग से इनसे निपटने का प्रयास करते हैं। इनमें से किसी समस्या का कोई एक सामान्य समाधान करना संभव नहीं है। फिर भी ऐसे आधार हैं जिन पर हम इन स्थितियों की जानकारी विकसित कर सकते हैं। ऐसी जानकारियाँ उन तरीकों के बारे में सोचने में अभ्यासकर्ता अध्यापक की सहायता करेगी। "विकास को समझना" नामक इस इकाई में हम इस दिषा में शुरुआत करने के लिए बच्चे और बाल्यावस्था की धारणाओं के बारे में विचार करेंगे, जिसकी चर्चा आगामी इकाइयों में की जाएगी।

इन सभी तीनों अध्यापकों के पास अनुभव से प्राप्त हुए कुछ प्रष्न हैं। ये प्रष्न और अनुभव उनकी कक्षाकक्षों में उनके प्रेक्षण (अवलोकन) और बच्चों के लिए सरोकार पर आधारित हैं। इस तथ्य के बावजूद कि सभी बच्चे एक–दूसरे से बहुत भिन्न होते हैं, कुछ सामान्य अनुभव भी हैं। ये साझा अनुभव किस प्रकार बच्चों पर प्रभाव छोड़ते हैं, बच्चों के बारे में हमारी सोच को वे किस प्रकार प्रभावित करते हैं और बच्चों के अपने साझा अनुभव होते हैं, ऐसा क्या है, ये कुछ ऐसे प्रष्न हैं जिन पर हम इस इकाई को पढ़ते समय प्रकाष डालेंगे। हम दो अवधारणाओं बाल्यावस्था के निर्माण और बच्चों के अनुभवों की जानकारी के बीच अंतर स्पष्ट करने का भी प्रयास करेंगे।

5.3.2 बच्चे और बाल्यावस्था की धारणाएँ

वयस्कों के रूप में हम यह महसूस करते हैं कि हम बाल्यावस्था और बच्चों के अनुभवों को अच्छी प्रकार समझते हैं। आइए, अपने आप से कुछ प्रष्न पूछें। क्या हम "बाल्यावस्था" को परिभाषित कर सकते हैं? हम सभी बच्चे रहे हैंः तो क्या हमारे लिए बच्चे की "परिभाषा देना" संभव होगा? कुछ लोग कह सकते हैं कि वे ऐसा कर सकते हैं। अधिकतर लोग बाल्यावस्था और बच्चों का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग कर सकते हैंः

बच्चे होते हैंः

निष्कपट, ईष्वर की देन, पवित्र और सच्चे, मधुर, आकर्षक, विनोदषील, "बचकाना", मजाकिया, बेवकूफ, शरारती, सुकुमार, संरक्षित, कुम्हार की मिट्टी की तरह कोमल,

बाल्यावस्था होती हैः

कोमल आयु, जीवन का सर्वाधिक सुरक्षित समय, स्वतंत्र, आश्रित, जीवन में सर्वाधिक आनंददायक अवस्था, आमोद–प्रमोद की आयु

ये सामान्य विचार बच्चों के अनुभवों को समझने का अत्यंत सीमित तरीका है। उदाहरण देने के लिए हम उपर्युक्त स्थितियों का स्मरण करते हैं। समीन की कक्षा में बच्चे वंचित परिवेष से संबंध रखते हैं और उनका एक अलग अनुभव है। क्या आपके विचार में सभी बच्चों जिनमें धनी परिवारों से संबंध रखने वाले बच्चे भी शामिल हैं, का एक जैसा अनुभव है? यह

कम संभव है जब तक कि कोई विशेष मामला न हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक बच्चे के रहन–सहन की भिन्न–भिन्न परिस्थितियाँ हैं। चूँकि बच्चों के अनुभव भिन्न–भिन्न होते हैं, इसलिए एक श्रेणी के रूप में बच्चों के बारे में सोच–विचार करना और बाल्यावस्था का केवल एक अर्थ लगाना अथवा 'परिभाषित' करना जटिल होगा। यह हममें से कुछ को कुछ असाधारण लगे परंतु बच्चे और बाल्यावस्था के बारे में अलग–अलग और परस्पर–विरोधी परिप्रेक्ष्य भी हैं। आइए, हम इनसे परिचय प्राप्त करें:

i) **आयु की कसौटी अथवा मानदंड (The Age Criterion):** सामान्य तौर पर 'आयु' बच्चे और बाल्यावस्था को परिभाषित करने की कसौटी होती है। साधारणतया, बच्चे और बाल्यावस्था को आयु के आधार पर परिभाषित किया जाता है। मानव को वयः संधि (यौवनावस्था) के आरंभ होने तक जन्म से बच्चा ही समझा जाता है अर्थात औसत बच्चा जन्म से 13 वर्ष तक की आयु अवधि का होता है। अतः बाल्यावस्था ही यह आयु अवधि होती है जो जन्म से यौवनारंभ तक होती है।

   आयु की सीमा रेखा के बारे में बहस होती रही है। कुछ लोगों का मानना है कि बच्चे के अस्तित्व में आते ही अर्थात् भ्रूण अवस्था में ही जन्म लेने से पहले बाल्यावस्था आरंभ हो जाती है। यह भी एक कारण है कि अनेक देषों में बच्चे के विकास में एक विशेष अवस्था के पष्चात 'भ्रूण' की हत्या करना एक अपराध है। इसके अतिरिक्त, कुछ लोगों का तर्क है कि बाल्यावस्था उस अवधि तक होती है जब तक व्यक्ति (बच्चे) को 'वयस्कों' के रूप में सभी कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं हो जाते। इसका अर्थ है कि एक व्यक्ति को जब तक एक वयस्क के रूप में कानूनी रूप से मान्यता नहीं मिल जातीं तब तक वह बच्चा है। भारत में इसका अर्थ होगा कि 18 वर्ष की आयु तक व्यक्ति बच्चा है।

ii) **कानूनी दृष्टिकोण (Legal View) :** यह अवलोकन करना रोचक होगा कि पूरे विष्व में कानूनी वयस्कता (legal adulthood) के लिए आयु अलग–अलग है। भारत में यह 18 वर्ष, ईरान में 15 वर्ष, स्काटलैंड में यह 16 वर्ष है जबकि जापान में यह 20 वर्ष है और मिस्र में यह 21 वर्ष है। आपके विचार में जीवन के संबंध में कानूनी आयु के निहितार्थ क्या हैं? कानूनी वयस्कता प्राप्त करने तक, व्यक्ति (बच्चा) संरक्षित नागरिक है। अतः, बच्चे अथवा अवयस्क के प्रति अभिभावकों और सरकार का दायित्व हैं? उनका भोजन और स्वास्थ्य, वस्त्र और आवास, षिक्षा और अच्छा जीवन अभिभावकों और सरकार के उत्तरदायित्व हैं। एक वयस्क व्यक्ति की आयु प्राप्त करने के पष्चात, व्यक्ति कानूनी रूप से अपने लिए उत्तरदायी होता है। व्यक्ति रोजगार प्राप्त कर सकता है, मतदान कर सकता है, चुनाव लड़ सकता है, विवाह कर सकता है, केस दायर कर सकता है, संपत्ति खरीद सकता है, वाहन आदि चला सकता है।

   परंतु इस कानूनी कसौटी में अनेक परस्पर–विरोध हैं। उदाहरण के लिए, भारत में कार्य करने की आयु 14 वर्ष है। इस अवस्था में 'बच्चा' न तो मतदान कर सकता है और न ही उसके पास वयस्क अधिकार होते हैं। वह व्यक्ति जिसे वयस्क के रूप में अधिकार प्राप्त नहीं हैं, रोजगार प्राप्त करने में अतिसंवेदनषील अर्थात असुरक्षित होंगे। क्या आपके विचार में शारीरिक और मानसिक रूप से 14 वर्ष तक की आयु के व्यक्ति को मजदूरी के काम में लगाना स्वास्थ्यकर है?

iii) **एक श्रमिक के रूप में बच्चा (child as a labour):** इस तथ्य के बावजूद कि बाल श्रम ग़ैर–कानूनी है, असंख्य बच्चे कारखानों (कालीन बुनना, बीड़ी बनाना, चूड़ी बनाना, पटाखों के कारखानों आदि में काम करना), छोटी–छोटी दुकानों में काम करते हैं और

घरेलू काम–धंधे (सफाई करना, खाना बनाना, बच्चों की देखभाल करना, आदि) करते हैं। अनेक बच्चे ऐसी स्थितियों में भी होते हैं जिनमें उन्हें भीख माँगनी पड़ती है। ऐसी भी स्थितियाँ हैं जहाँ बच्चों को वेश्यावृत्ति में धकेल दिया जाता है। गरीबी में बीतने वाला बचपन, घरेलू परिस्थितियों में बच्चों के अनुभव बेहतर स्थितियों से भिन्न होते हैं। ऐसे मामलों में बच्चों को परिवार की अर्थव्यवस्था में सहायक अथवा अपने लिए उत्तरदायी माना जाता है। अधिकतर, ऐसी स्थितियों में बच्चे वयस्कों (बड़ों) से बहुत अलग ढंग से नहीं रहते।

> आज विष्व में रहने वाले ऐसे भी लोग हैं जिन्हें निष्पक्ष मुकदमे का कोई कानूनी अधिकार नहीं है, जो उस प्रक्रिया में भागीदारी से वंचित हैं जो उन पर नियंत्रण करती है और जो दूसरों के अधिकार के अधीन हैं जो दंडित हुए बिना उनके साथ दुर्व्यवहार, दुरुपयोग अथवा शोषण कर सकते हैं। ये बाल्यावस्था के कैदी हैं।
>
> जोह्नहॉल्ट (1974), एस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड

iv) **इतिहास में बाल्यावस्था (Childhood in History):** यदि कोई व्यक्ति इतिहास का विश्लेषण करे तो उसे पता चल पाएगा कि बच्चों का अर्थ और विवरण इतिहास में विभिन्न समयावधियों में अलग–अलग है। फिलिप एरीज नामक फ्रांसीसी इतिहासकार ने विश्लेषण किया कि बच्चों को इतिहास में किस प्रकार चित्रित किया गया था। कलाकृतियों (कार्यों), अक्षरों और अनेक अन्य स्रोतों का प्रयोग करके उसने पता लगाया कि मध्यकाल से लेकर अब तक बाल्यावस्था का अर्थ किस प्रकार विकसित हुआ। निम्नलिखित बॉक्स (खाने) को पढ़िए:

> फिलिप एरीज़ ने लिखा था कि बाल्यावस्था एक अत्यंत नई अवधारणा है। यह मध्यकाल में विद्यमान नहीं थी। उन्होंने पाया कि उस युग की चित्रकारी में कोई भी बच्चे चित्रित नहीं थे। या तो केवल बहुत छोटे षिषु या वयस्क चित्रित थे। वे सभी जो षिषु नहीं थे, वे वयस्क शारीरिक भाषा और वयस्क जैसी अभिव्यक्तियों के साथ वयस्क वेशभूषा में चित्रित किए गए थे। सर्वाधिक छोटे व्यक्तियों (बच्चों) को प्रषिक्षण दिया जाता था, वे खेतों में श्रमिक बनते थे और बहुत ही कम आयु में वयस्कों की भूमिका निभाते थे। यहाँ तक कि लगभग सात वर्ष के 'व्यक्तियों' को बच्चों के रूप में नहीं बल्कि छोटे वयस्कों के रूप में देखा जाता था।
>
> मध्यकालीन संस्कृतियों में बाल्यावस्था की अवधारणा की कमी थी। बाल्यावस्था एक बाद का ऐतिहासिक सृजन है। यह 16वीं और 17वीं शताब्दियों में धनी लोगों (उच्च श्रेणी) में अस्तित्व में आया। यह उच्च श्रेणी में 18वीं शताब्दी में आगे विकसित हुआ और अंत में इसका उच्च और निम्न श्रेणियों दोनों के दृश्य पटल पर 20वीं शताब्दी में अभ्युदय हुआ।
>
> एक बार जब बाल्यावस्था की संस्था का अभ्युदय होना आरंभ हुआ, समाज में छोटे व्यक्ति की स्थिति बदलने लगी। बच्चों को वयस्क वास्वविकता (adult reality) से बचाना था। बच्चे से जन्म, मृत्यु, लिंग, त्रासदी (tragedy) और वयस्क दुनिया की घटनाओं को छिपाना था। बच्चों को आयु से अधिकतर अलग किया गया।
>
> फिलिप एरीज (1962) *सेंचुरीज ऑफ चाइल्डहुड*

> एक अन्य विचारक जोह्न हॉल्ट आधुनिक समाज में छोटे व्यक्तियों (बच्चों) और उनके स्थान अथवा स्थान की कमी के लिए लिखते हैं। वह आधुनिक बाल्यावस्था की संस्था, दृष्टिकोण, रीति–रिवाजों और आधुनिक जीवन में बच्चों को परिभाषित और उन्हें खोजने वाले कानूनों के बारे में बात करते हैं तथा व्यापक सीमा तक उनका जीवन किस प्रकार का है एवं हम तथा उनके बड़े–बुजुर्ग किस प्रकार उनके साथ व्यवहार करते हैं यह सब निर्धारित करते हैं। इसके अतिरिक्त वह उन अनेक तरीकों के बारे में भी बात करते हैं जिनमें आधुनिक बाल्यावस्था उनमें से बहुत से बच्चों के लिए बुरी प्रतीत होती है जिसमें वह रहते हैं तथा यह कैसी होनी चाहिए तथा इसे किस प्रकार बदला जा सकता है। इसकी भी चर्चा करते हैं।
>
> जोहनहाल्ट (1974), *एस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड*

ऐसे अनेक तरीके रहे हैं जिनके द्वारा सभ्यता के इतिहास में विभिन्न कालों में बाल्यावस्था पर विचार किया गया है। अतः बाल्यावस्था एक ऐसी अवधारणा है जो वयस्कों की आँखों के माध्यम से विकसित होती है और यह समाज में छोटे बड़े होते हुए व्यक्तियों (बच्चों) को समझने का तरीका है।

v) **विभिन्न संस्कृतियों में बाल्यावस्था (Childhood in different cultures)**: इतिहास में न केवल विभिन्न चरणों में, बल्कि संस्कृतियों के बीच भी बच्चों की सामाजिक स्थिति और भूमिकाओं में अंतर है। ये अंतर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच, विभिन्न समुदायों के बीच और विभिन्न देषों के बीच दिखाई देते हैं। कुछ अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी स्थानों की तुलना में बच्चों और वयस्कों के बीच कम अंतर है। यह कहा जाता है कि "किषोरावस्था" (adolescence) को बाल्यावस्था में एक पृथक चरण के रूप में नहीं देखा जाता है। ज्योंहि बच्चा वयस्क भूमिकाएँ निभाने के लिए शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाता है, तो वह वयस्क भूमिकाएँ ग्रहण करना शुरु कर देता है। उदाहरण के लिए, वे कमाना, काम करना शुरु कर देते हैं, वयस्कों जैसे कपड़े पहनते हैं और कम आयु में उनका विवाह हो जाता है। यह तर्क दिया जाता है कि किषोरावस्था (बाल्यावस्था से वयस्कावस्था तक के संक्रमण की अवस्था के रूप में) की अवधारणा हाल ही में भारत और अनेक अन्य देषों में अस्तित्व में आई है। इसका अर्थ है कि यह सब पष्चिमी दुनिया के कुछ देषों की संस्कृति और मूल्य प्रणाली (value system) पर आधारित तीव्र शहरीकरण और वैष्वीकरण के कारण हुआ है। ऐसे तर्क भी हैं जो बाल्यावस्था (विशेषकर किषोरावस्था) को शहरीकरण और वैष्वीकरण की संस्कृति के सृजन के रूप में विश्लेषण करते हैं।

उपरोक्त चर्चाएँ बाल्यावस्था को मानने (अनुभव करने) के विभिन्न तरीकों पर प्रकाष डालती हैं। ये बच्चों के इन वयस्क विचारों में कुछ परस्पर–विरोधों, भ्रमों, समस्याओं और उदासीनता पर भी प्रकाष डालती हैं।

इसके अतिरिक्त, इन चर्चाओं के साथ अध्ययन और जानकारी बताती है कि बच्चों के जीवन और अनुभवों के कई पहलू हैं। ये इतनी अलग हैं कि बच्चे अथवा बाल्यावस्था के लिए कोई एक विचार रखना कठिन है। फिर भी, हम बाल्यावस्था को एक श्रेणी के रूप में देखते हैं। जैसा कि हम इस भाग के आरंभ में पढ़ चुके हैं, इस प्रकार की दृष्टि बच्चों के अनुभवों की परानुभूतिक जानकारी (emphetic understanding) से अधिक सृजनात्मक और निर्माणात्मक होती है। इसे समाज वयस्कों की कार्यसूची और वयस्कों की दृष्टि से आकार मिलता है। ये कार्यसूचियों के बच्चों के साथ वयस्कों की अंतःक्रियाओं में पूरी होती

हैं। बच्चों को अवलोकन करने का यह तरीका वयस्कों का निर्माण प्रतीत होता है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि बाल्यावस्था का इस प्रकार का दृष्टिकोण बच्चों के अनुभवों और विष्व के प्रति उनके दृष्टिकोण को समझने में सहायता नहीं कर सकता बल्कि यह हमारे रास्ते में आता है।

वयस्कों के रूप में जो भी विद्यालय के अध्यापक/अध्यापिकाएँ हैं, उनका भी इस प्रकार के विचारों में समाजीकरण होता है। इससे हम बच्चों को एक समान वेशभूषा (रूप) में देख पाते हैं न कि ऐसे अलग लोगों के रूप में देखते हैं। जिनके पास विविध अनुभव, रुचियाँ, अधिगम शैलियाँ और ज्ञान हैं। हम प्रायः बच्चों को उस तरह से बनने को मजबूर करते हैं जिस तरह से हम उन्हें बनाना चाहते हैं जो कि बच्चों के विकास को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। इस पाठ्यक्रम को करते हुए अध्यापकों/अध्यापिकाओं के रूप में हम इस इकाई में बच्चों के अनुभवों के साथ एक परिचय विकसित करने का प्रयोग करेंगे ताकि हम उन लोगों के बारे में जिन्हें हम पढ़ाते हैं, अपने विचारों पर प्रष्न कर सकते हैं। यद्यपि, वयस्कों के रूप में हम कभी भी यह क्षमता विकसित करने में सफल न हों कि किस प्रकार बच्चे विष्व का अनुभव करते हैं, फिर भी हम कम से कम अपनी जानकारियों की सीमाओं से परिचित हो सकते हैं।

बोध प्रष्न

टिप्पणी: क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

उपरोक्त चर्चाओं को ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित प्रष्नों के बारे में विचार कीजिए:

1) क्या कोई एक तरीका है जिसके अंतर्गत हम बच्चे और बाल्यावस्था को परिभाषित कर सकते हैं? क्यों अथवा क्यों नहीं?

....

....

....

....

....

....

2) बाल्यावस्था के बारे में कम से कम दो परिचर्चाओं हेतु विषय दीजिए।

....

....

....

....

....

....

5.4 विकास की प्रक्रिया को समझना : बाल विकास

जैसा कि हम पढ़ चुके हैं, बच्चों को 'परिभाषित करने' का कोई एक तरीका नहीं है और कोई एक बाल्यावस्था नहीं है। परंतु ऐसे कुछ सामान्य स्वरूप हैं जिनमें बताया गया है कि हम मानव के रूप में किस प्रकार बढ़ते हैं। यह समझने के लिए कि समय के साथ—साथ मानव का किस प्रकार परिवर्तन होता रहता है, हम विभिन्न चरणों में इन परिवर्तनों का वर्गीकरण करते हैं। अपनी जानकारी के उद्देष्य के लिए, कुछ सामान्य परिवर्तन जिनका अनुभव मनुष्य अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दोरान करते हैं, हम 'बच्चों' में वृद्धि (growth) और विकास (development) का विश्लेषण करते हैं। इस खंड में हम बाल विकास की प्रक्रिया को मनोविज्ञान की दृष्टि से समझने का प्रयास करेंगे। यह विकास को समझने का केवल एक तरीका है, अन्य तरीकों के बारे में अगले दो खंडों में चर्चा की जाएगी।

5.4.1 अध्यापकों हेतु प्रासंगिकता

विद्यालयी षिक्षा (schooling) उन बच्चों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिन बच्चों की इस तक पहुँच है। विद्यालय में व्यतीत किया गया समय उनके वृद्धि चरण में एक भाग पर्याप्त होता है। अतः एक विद्यालय और अध्यापकों की न केवल बच्चों को 'षिक्षित करने में, बल्कि उनके जीवन और 'वृद्धि' चरण में महत्वपूर्ण भूमिका भी है। इस प्रकार, इस चरण की प्रक्रियाओं और सरोकारों को समझना अध्यापक के लिए अनिवार्य हो जाता है। न केवल विद्यालय में अनुभव, बल्कि घर पर, कार्यस्थल पर प्राप्त होने वाले अनुभव और हमारी सोच और शरीर से 'वृद्धि' के इस चरण का निर्माण होता है। वे लोग जो विद्यालय नहीं गए हैं, उन्हें काम पर अथवा समुदाय में ऐसे ही अनुभव हुए होंगे। जब हम अध्यापक बनने के लिए अध्ययन कर रहे हैं, तब इन अनुभवों पर प्रकाष डालना अत्यंत रोचक होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि इससे हमें अपने विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से जानने में सहायता मिलेगी। संभवतया, हम अपने विद्यार्थियों को बेहतर अनुभव प्रदान करने में सफल होंगे। प्रारंभिक विद्यालयों के अध्यापकों के रूप में हम बच्चों के साथ काम कर रहे होंगे। हमें लगातार उनके साथ कार्य करने, उनसे सीखने और उन्हें पढ़ाने की आवष्यकता होगी। बेहतर अध्यापक न केवल बनना ही उद्देष्य है बल्कि बच्चों, विद्यालय, समाज और स्वयं को बेहतर ढंग से समझना भी उद्देष्य है। आइए, इस प्रक्रिया को हम अपनी बाल्यावस्था के विषय में सोचने से आरंभ करें।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तर को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिलाइए।

3) अपनी बाल्यावस्था के बारे में सोचिए। क्या आपके विचार में आपके विद्यालय ने आपके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है? कैसे?

....

....

....

....

....

5.4.2 बाल विकास का अर्थ

शैशवावस्था (जन्म से 18 माह तक)	पूर्व वाल्यावस्था (18 माह–6 वर्ष)	उत्तर वाल्यावस्था (6–13 वर्ष)	किशोरावस्था (13–18 वर्ष)	प्रौढ़ (18 वर्ष और अधिक)

चित्र 5.1: मानव विकास की अवस्थायें

हम जिस वृद्धि की प्रक्रिया का उल्लेख कर रहे हैं, उसे मनोविज्ञान में विकास कहा जाता है। विकास शब्द (प्राणियों के संदर्भ में) उन परिवर्तनों से संबंधित है जो गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक मनुष्यों (अथवा जीव जंतुओं) में होते हैं। यह शब्द सभी परिवर्तनों पर लागू नहीं होता परंतु उन परिवर्तनों के लिए भी है जो व्यवस्थित तरीकों से दिखाई देते हैं और पर्याप्त समयावधि तक रहते हैं। ये परिवर्तन एक निष्चित अवधि में होते हैं और जीवन का एक अंग बन जाते हैं। अस्थायी परिवर्तन विकास नहीं होते यद्यपि ये विकास को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, सर्दी और जुकाम होने से कुछ परिवर्तन होते हैं – हमारी आवाज बदल जाती है, हमारा व्यवहार भी कुछ–कुछ बदल जाता है और हमारी कार्य करने की क्षमता भी बदल जाती है। इसके अतिरिक्त, ये मनोदषा में होने वाले अस्थायी परिवर्तन हैं। ये कुछ समय में दूर हो जाते हैं और इसलिए इन्हें विकास नहीं माना जा सकता है।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तर को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिलाइए।

4) कल्पना कीजिए कि एक बच्ची सीढ़ियों से गिर जाती है और उसके पैर में चोट लगती है। वह कुछ दिनों तक चल नहीं पाती, परंतु वह शीघ्र ही ठीक हो जाती है और अपने दैनिक क्रियाकलाप फिर से करने लगती है। क्या इस परिवर्तन को विकास कहा जाएगा? क्यों?

....

....

....

....

मनोवैज्ञानिक उन परिवर्तनों का आकलन अथवा अवलोकन करने के लिए विश्लेषण करते हैं कि किन्हें विकास माना जाए। अधिकतर उन परिवर्तनों को विशेषकर बाल्यावस्था में विकास कहा जाता हैः

- जिनका जीवन में स्थायित्व होता है और जो एक समयावधि तक होते रहते हैं।
- जिनमें ऐसा व्यवहार होता है जो अधिक अनुकूल, व्यवस्थित और जटिल होता है (वुलफ्लॉक, 2004, पृ. 58)

इन परिवर्तनों में 'विकास' का एक बोध है जो इनके साथ जुड़ा है। इसका अर्थ है कि बच्चा एक वयस्क के रूप में विकास कर रहा है। यह वयस्कों के वे तरीकें हैं जिन्हें अधिक अनुकूल, व्यवस्थित और जटिल तरीकों (इस दृष्टिकोण की आलोचना भी हो सकती है) के रूप में सोचा जा सकता है। मनुष्यों में विकास का अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत किया जाता है जिन्हें सामान्य तौर पर विकासात्मक मनोविज्ञान और मानव विकास कहा जाता है।

बाल विकास, विशेषकर, अन्वेषण के एक क्षेत्र के रूप में उन परिवर्तनों के अध्ययन (अथवा स्थिरताओं) के लिए हैं, जो जीवन के प्रथम दो दषकों के दौरान होते हैं (बर्क, 2006)। यह इन मुद्दों पर ध्यान देता है, जैसे – वे प्रक्रियाएँ (षारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक) क्या हैं जो विकास में शामिल हैं? विकास को प्रभावित करने वाले कारक अथवा शक्तियाँ क्या हैं? विकास में समानताएँ (commonalities) और अंतर क्या हैं? साधारण रूप से बच्चों के विकास का पूरी तरह से अध्ययन करना ही उद्देष्य है।

5.4.3 विकास के विभिन्न पहलू/आयाम

विकास के अध्ययन को तीन व्यापक क्षेत्रों (जो वास्तव में परस्पर संबंधित और व्यापक हैं) में विभाजित किया गया है (बर्क, 2006):

- **शारीरिक विकास (Physical Development):** शारीरिक आकार, अनुपात, शारीरिक तंत्र का कार्य संचालन, गामक क्षमताएँ आदि।
- **संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development):** बौद्धिक योग्यताओं, विष्व को समझने के तरीकों आदि में परिवर्तन। कुछ अनुसंधानकर्ता भाषा विकास का विश्लेषण, संज्ञानात्मक विकास के एक भाग के रूप में करते हैं।
- **संवेगात्मक, सामाजिक–सांस्कृतिक और नैतिक विकास (Emotional, Socio-cultural and Moral development):** समझने में और स्वयं और आसपास के लोगों से संबंधित परिवर्तन, भावनाएँ, मूल्य, भाषा, पहचान आदि। व्यक्ति का सांस्कृतिक संदर्भ इस क्षेत्र में विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है परंतु इस आयाम पर कम ध्यान दिया गया है।

हम आगामी तीन इकाइयों में इन सबका विस्तार से अध्ययन करेंगे। तथापि ये सभी पहलू एक–दूसरे से संबंधित हैं। वे एक–दूसरे को इतना प्रभावित करते हैं कि उन्हें पृथक करना कठिन है। हम उन्हें अध्ययन की सुगमता हेतु पृथक करते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे अनेक कारक हैं जो विकास के इन पहलुओं पर प्रभाव डालते हैं। इनमें परिवेषी कारक सम्मिलित हैं जैसे पोषण, चोट, स्वास्थ्य, सामाजिक–आर्थिक दषाएँ, सामाजिक संबंध, संस्कृति, लिंग आदि। अन्य प्रकार के कारक जो वृद्धि और विकास को प्रभावित करते हैं, इनमें जीन (genetic) संबंधी और वंषानुगत (hereditary) कारक शामिल हैं।

5.4.4 वृद्धि एवं विकास में अंतर

हमने इस इकाई के प्रथम भाग में विकास का उल्लेख वृद्धि के रूप में किया है। यह हमें एक संबंधित अवधारणा अर्थात वृद्धि की अवधारणा का स्मरण कराता है। कभी–कभी

विकास और वृद्धि का प्रयोग एक–दूसरे के स्थान पर किया जाता है। निम्नलिखित दो वाक्यों को पढ़िए:

- नेहा का विकास बहुत तेजी से हो रहा है ... देखिए, वह कितनी लंबी हो गई है, वह अपने आप अलमारी खोल लेती है।
- रजत एक विचारषील बच्चा बन गया है, वह अपने मित्रों का बहुत ध्यान रखता है।

दोनों परिवर्तन जो अत्यधिक स्थायी हैं, दोनों बच्चों के साथ इनके बने रहने की संभावना है। साथ ही, इन बच्चों के अत्यधिक जटिल व्यवहार की ओर अग्रसर होने की संभावना है। इस प्रकार इन दोनों को विकास के रूप में समझा जाना चाहिए। तथापि, यदि आप ध्यानपूर्वक विश्लेषण करें तो आप दोनों मामलों में कुछ अंतर देखेंगे:

- नेहा लंबी हो गई है। यह बहुत–कुछ शारीरिक परिवर्तन है जबकि ऐसा प्रतीत होता है कि रजत ज्यादा समझदार/जिम्मेदार हो गया है जोकि शरीर से संबंधित परिवर्तन नहीं है।
- नेहा लंबी होती जा रही है जोकि अधिक जैविक है और संभवतया आनुवंषिकता और प्राकृतिक तरीका है (यदि पोषणात्मक, शारीरिक, सामाजिक आवष्यकताएँ पूरी होती हैं)। जबकि समझदार/संवेदनषील/जिम्मेदार होना बहुत कुछ एक संवेगात्मक परिवर्तन है तथा उसके आसपास के सामाजिक परिवेष (विकास के लिए प्राकृतिक दषाएँ) पर बहुत निर्भर करता है।
- कोई भी व्यक्ति सेंटीमीटरों अथवा इंचों में नेहा की ऊँचाई (कद) माप सकता है परंतु क्या आप किसी प्रकार यह माप सकते हैं कि रजत कितना जिम्मेदार और समझदार हो गया है? परंतु ऐसा दिखाई नहीं देता।

नेहा में जो परिवर्तन हुआ है वह वृद्धि है। अतः यह कहना अत्यधिक उपयुक्त होगा कि 'नेहा तेजी से बढ़ रही है'। वृद्धि उन परिवर्तनों से संबंधित है जो तेजी से अपने आप होते हैं "और बहुत सीमा तक तब तक प्राकृतिक/जैविक कारकों और आनुवंषिकता के मामले हैं जब तक बाहर से बाधा उत्पन्न न होती हो।

उदाहरण के लिए, कद तब तक प्राकृतिक ढंग से बढ़ेगा जब तक वह कुपोषण, दुर्घटना, संवेगात्मक दबाव, शारीरिक क्रियाकलाप आदि की कमी से प्रभावित नहीं होता है। वे परिवर्तन जिन्हें वृद्धि माना जाता है, स्वभावतया वे परिमाणात्मक (मात्रात्मक) होते हैं। बच्चे में ऐसे परिवर्तन अथवा वृद्धि उसके शारीरिक विकास में सम्मिलित हो जाते हैं। इसलिए, वृद्धि को विकास के उपवर्ग (subset) माना जा सकता है। रजत में देखा जाने वाला परिवर्तन कुल मिलाकर बहुत आंतरिक अथवा परोक्ष है और उसे किसी व्यवहार के माध्यम से ही केवल देखा जा सकता है।

वे प्राकृतिक रूप से जैविक परिवर्तनों की अपेक्षा सामाजिक और वैयक्तिक परिवर्तन हैं और इन्हें सामाजिक/वैयक्तिक विकास माना जा सकता है यदि वे उसके (बच्चे) के साथ बने रहते हैं। अतः वृद्धि और विकास अलग–अलग हैं परंतु ये एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।

एक दूसरी अवधारणा भी है जो विकास से संबंधित है। यह अवधारणा **अधिगम** के बारे में है। निम्नलिखित मामले पर विचार कीजिए:

शबनम जब विद्यालय में शुरु में आई थी, तो बहुत शर्माती थी। अब वह अपनी सहेलियों को बताती है कि उसे डर था कि वह कहीं गलत न हो। परंतु धीरे–धीरे उसने अन्य बच्चों

को डर के बिना बोलते हुए देखा। उसने देखा कि उनका कोई भी मजाक नहीं उड़ाता था और अध्यापक हमेषा बच्चों की अभिव्यक्तियों (भावनाओं) की सराहना करते थे। धीरे–धीरे शबनम ने भी पूछना, उत्तर देना, बोलना और अभिव्यक्त करना आरंभ कर दिया। अब वह बोलने में पहल करती है। अब उसने मंच पर बोलने के लिए अपना नाम देना आरंभ कर दिया है। उसने पिछले सप्ताह बिना तैयारी किए हुए भाषण दिया और पुरस्कार जीता।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस मामले में शबनम बदल गई है। यह परिवर्तन कैसे आया? शबनम द्वारा बोलने और बोलते समय दूसरों को देखने के अनुभव ने परिवर्तन करने में उसकी सहायता की। इस परिवर्तन को उसके व्यवहार में देखा जा सकता है और अब वह बोलने में पहल करती है। इस प्रकार के परिवर्तन को अधिगम (सीखना) कहा जाता है। व्यापक अर्थ में, अधिगम किसी व्यक्ति के ज्ञान अथवा व्यवहार में अपेक्षाकृत एक स्थायी परिवर्तन है जो अनुभव से प्राप्त होता है। ऐसा परिवर्तन अच्छे अथवा बुरे के लिए इच्छा से अथवा अनिच्छा से हुआ अथवा जागरूक अथवा अजागरूक परिवर्तन हो सकता है। परंतु यह स्वतः जीन (gene) अथवा प्रकृति से नहीं, परंतु यह अनुभव से प्राप्त होता है।

क्या इस परिवर्तन को विकास माना जा सकता है? यदि हाँ, तो अधिगम किस प्रकार विकास से भिन्न है? अधिगम विकास से जुड़ा है परंतु हो सकता है कि यह अपने आपमें विकास न हो? अधिगम और विकास के बीच इस संबंध के दो पहलू हैं। पहला, अधिगम से विकास होता है। दूसरा, विकास, अधिगम के लिए स्थितियाँ सृजित कर सकता है। उदाहरण के लिए, इस मामले में शबनम का अधिगम उसकी कक्षाकक्ष की सामाजिक प्रक्रियाओं के बारे में है और इस अधिगम के आधार पर उसका व्यवहार बदल जाता है। इससे उसका सामाजिक विकास बढ़ेगा। साथ ही, शबनम यदि सीखने के लिए 'तैयार' नहीं होती तो वह इसे सीख नहीं पाती। कहने का अर्थ हे कि यदि शबनम के पास दूसरों को बताने के लिए पहले ही विकासात्मक योग्यता नहीं होती तो वह इसे नहीं सीख पाती। हम इस मुद्दे पर इकाई 8 'संज्ञानात्मक विकास' में विस्तार से चर्चा करेंगे।

बोध प्रष्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तर को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिलाइए।

5) अधिगम विकास से किस प्रकार भिन्न हैं?

....

....

....

....

....

5.5 बाल विकास को समझने की विधियाँ

बच्चों में विकास को समझने के विभिन्न परिप्रेक्ष्य हैं। यहाँ हम इनमें से दो परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा करेंगे जो मुद्दों को समझने में अति प्रासंगिक हैं जिन पर इस इकाई में बाद में प्रकाष डाला जाएगा।

5.5.1 जीवन में विकास – अवस्थाएँ

पिछले भागों में बताया गया है कि बच्चे और बाल्यावस्था को आयु के अनुसार परिभाषित किया जाता है। बच्चे को वृद्धि (growing-up) की प्रक्रिया में एक 'अवस्था' (stage) माना जाता है। इस दृष्टिकोण से, जीवन में अवस्थाओं के अनुसार इस प्रक्रिया के स्पष्टीकरण हैं। विष्व में मानव विकास की नौ मान्य अवस्थाएँ हैं। विभिन्न अवस्थाओं में यह श्रेणीकरण विशेष वर्षों के दौरान होने वाले विकास के स्वरूप के आधार पर किया गया है।

- परंतु सामान्य रूप से पिछली अवस्थाएँ आगामी अवस्था का आधार निर्मित करती हैं।
- ये अवस्थाएँ विकास की उस प्रक्रिया को भी प्रदर्षित करती हैं जो ऊर्ध्वाधार और क्षैतिज हैं, अर्थात प्रत्येक अवस्था दूसरी अवस्था से अधिक जटिल है और प्रत्येक स्तर पर कुछ बुनियादी विकास कार्य होते हैं।

विकास की नौ अवस्थाओं को निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया हैः

अवस्था	**कालानुक्रम आयु**	**षिक्षा / देखभाल के स्तर**	**विकासात्मक विशेषताएँ**
प्रसवपूर्व (Pre-natal)	गर्भधारण–जन्म	प्रसवपूर्व देखभाल	कोषिका से मानव षिषु तक होने वाले परिवर्तन में तीव्र गति
शैशव (Infancy)	0 – 1 वर्ष	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और षिक्षा	शरीर में तीव्र परिवर्तन, सामाजिक संबंधों की शुरुआत
प्रारंभिक बाल्यावस्था	1 – 3 वर्ष	ई.सी.सी.ई. पूर्व–विद्यालय	भाषा के प्रथम संकेत, बेहतर गामक–कौषल (motor-skills), घुटनों के बल सरकना, स्वायत्तता की ओर कदम
मध्य बाल्यावस्था	3 – 6 वर्ष	पूर्व प्राथमिक	बेहतर आत्म–नियंत्रण, अधिक स्वायत्तता, तीव्र भाषा और विचार (चिंतन) विकास, सामाजिक संबंधों का विस्तार होना।
उत्तर बाल्यावस्था	6 – 11 वर्ष	प्राथमिक / प्रारंभिक	अत्यधिक नई शारीरिक योग्यताएँ, अधिक तार्किक चिंतन (विचार) नैतिकता, मित्रता
वयःसंधि (यौवनारंभ) और किषोरावस्था	11–18 वर्ष	प्रारंभिक / माध्यमिक / वरिष्ठ माध्यमिक	वयःसंधि, यौन परिपक्वता, अमूर्त चिंतन (abstract thinking), पहचान की तलाष
किषोर और युवा वयस्कता	18 – 45 वर्ष	उच्चतर षिक्षा व्यवसाय	युवा–कानूनी रूप से वयस्क–विकसित शारीरिक–मानसिक तंत्र, घनिष्ठ संबंधों की तलाष, अगली पीढ़ी के लिए वयस्कता देखभाल, उत्पादनकारी कार्य
मध्यावस्था	40–60 / 65 वर्ष	व्यवसाय	कार्य, रजोनिवृत्ति (menopause), नैतिकता में कमी, उन्नत सामाजिक संबंध
वृद्धावस्था	60 / 65 वर्ष	वृद्धावस्था देखभाल	सेवानिवृत्ति, शारीरिक क्षमताओं में कमी, संगति (साथ) चाहना, अनुभव पर बल देना।

विकास को समझने के इस तरीके के अनुसार माना जाता है कि बच्चा अपनी आयु के साथ–साथ विभिन्न अवस्थाओं की ओर अग्रसर होता (बढ़ता) है। इस अर्थ में यह समझा जाता है कि पीछे की ओर संचलन (गति) नहीं होगा।

5.5.2 सातत्य और सर्पिल प्रक्रिया के रूप में विकास

विकास संबंधी अवस्था मॉडल (stage model of development) बच्चे के विकास को समझने का एक सामान्य तरीका रहा है। फिर भी अवस्थाबद्ध प्रक्रिया के रूप में विकास को समझने की अनेक समीक्षाएं हैं। ऐसी बहुत सी जानकारियां हैं कि विकास स्पष्ट रूप से परिभाषित अवस्थाओं में नहीं होता है। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसे आयु–अवस्था में विभाजित नहीं किया जा सकता है। यह चलता रहता है। यह सातत्य से इस क्षेत्र में जारी रहने वाले विकास के साथ शैशव (infancy) से लेकर वृद्धावस्था तक जारी रहता है। कुछ सिद्धांतवादी कहते हैं कि सर्पिल (स्प्रिंग का आकार) सबसे अच्छी तरह विकास की प्रक्रिया को निरुपित करेगा। उनका विष्वास है कि यदि हम सर्पिल तरीके से आगे बढ़ रहे होते हैं तो यह ऊपर की ओर विकसित होता रहता है। वे स्पाइरल से नीचे की ओर भी संचलन (गति) से इंकार नहीं करते हैं। विकासात्मक विशेषताओं के संबंध की भी आलोचना की जाती है। उदाहरण के लिए, यह देखा जाता है कि कुछ बच्चों में भाषा के संकेत प्रारंभिक और मध्य बाल्यावस्था में दिखाई नहीं देते बल्कि भाषा का बिल्कुल विकसित तंत्र उत्तर बाल्यावस्था में उभरकर सामने आता है। फिर भी कहा गया कि वे बालक विकास के तरीके, विभिन्न संस्कृतियों में अलग–अलग हैं। विकास की प्रक्रियाओं के इर्द–गिर्द ऐसी अनेक परिचर्चायें होती रही हैं। इनमें से कुछ परिचर्चाओं को निम्नलिखित भाग में प्रस्तुत किया गया है।

5.6 विकास के बारे में परिचर्चा

इस तथ्य के बावजूद कि बाल विकास के क्षेत्र में अनेक अनुसधान होते रहे हैं, परंतु ऐसा कोई सुपरिभाषित तरीका नहीं है जिसमें विकास की प्रक्रिया पर सही ढंग से विचार किया गया है। अनेक लंबी परिचर्चाओं में से कुछ प्रमुख परिचर्चाएँ निम्नलिखित हैं:

प्रकृति और पर्यावरण संबंधी परिचर्चाः एक निष्पक्ष सहमति है कि प्रकृति और सामाजिक पर्यावरण (परिवेष) दोनों ही विकास में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं (कहने का अर्थ है कि यद्यपि शारीरिक विकास अत्यधिक सीमा तक आनुवंषिक रूप से योजनाबद्ध होता है, फिर भी इसके लिए एक स्वस्थ और अच्छे संतुलित बाह्य पर्यावरण की भी आवष्यकता पड़ती है)। परंतु प्रकृति अथवा पोषण/प्रोत्साहन में से अधिक महत्वपूर्ण क्या है, यह चर्चा का विषय है।

बाल्यावस्था से वयस्कता तक सतत् बनाम असतत् विकासः जैसा कि उपर्युक्त भाग में बताया गया है कि कुछ सिद्धांतवादियों का मानना है कि विकास अवस्था–आधारित होता है। बच्चे अवस्थाओ ंकी श्रेणी से गुजरते हैं (आयु विशेष द्वारा पहचान होती है), इसलिए प्रत्येक की तब तक विकासात्मक विशेषताएँ होती हैं जब तक कि वे कार्य के उच्चतम स्तर तक नहीं पहुँच जाते। विकास के इस प्रकार के मॉडल को यदि आलेख (ग्राफ) पर नहीं बनाया जाए तो यह सीढ़ी की तरह होगा। दूसरी ओर, ऐसे भी सिद्धांतवादी हैं जो विकास को एक सतत् प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। उनका विष्वास है कि बच्चे विष्व के प्रति वैसी ही प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, उनके तरीके मात्रात्मक रूप से अथवा जटिलता की मात्रा में भी अलग होते हैं। इस प्रकार, इन सिद्धांतवादियों का मानना है कि विकास की प्रक्रिया उसी प्रकार के उन कौषलों को अधिक से अधिक धीरे–धीरे शामिल करती है जो आरंभ में

थे। ये विकास वक्र (development curve) को ऊर्ध्वाधर प्रवण (ढलवाँ) सतत् वक्र (upward sloping continuous curve) के रूप में सूचित करेंगे (बर्क, 2006)

विकास संबंधी एक पाठ्यक्रम अथवा अनेक पाठ्यक्रमः अवस्था सिद्धांतवादियों का मानना है कि पूरे विष्व में बच्चे विकास के समान अनुक्रम का अनुसरण करते हैं। ये सिद्धांतवादी सामान्य जैविक और पर्यावरणीय कारकों की पहचान करने का प्रयास करते हैं जो विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। परंतु अन्य सिद्धांतवादियों का तर्क है कि सभी बच्चों के लिए एक सामान्य विकास अनुक्रम का मापन करना एक समस्या है क्योंकि विकास की गति, दर, शैलियाँ और संदर्भ अलग–अलग होते हैं। उदाहरण के लिए, ऐसे अनुसंधान भी हैं जिनसे पता चला है कि कुछ समाजों में आयु विशेष के बच्चे अन्य समाजों में अपने समकालीन बच्चे से आधारभूत गणितीय कार्य (basic mathematical functioning) में अधिक प्रवीण थे।

इन परिचर्चाओं के साथ–साथ, विकास के बारे में कुछ जानकारियाँ हैं जिन पर अत्यधिक सहमति हो रही है। इनमें से कुछ जानकारियाँ निम्नलिखित भाग में स्पष्ट की गई हैं।

5.7 विकास के बारे में कुछ सामान्य जानकारियाँ

विकास की प्रक्रिया पर यदि अनुसंधानकर्ताओं और जानकारियों का विश्लेषण किया जाए तो यह पाया जाएगा कि वे इस प्रक्रिया के बारे में कुछ आधारभूत तत्वों पर निष्पक्ष रूप से सहमत हैंः

- यह एक आनुक्रमिक (sequential) और सुव्यवस्थित प्रक्रिया (orderly process) है। उदाहरण के लिए हाथ और आँख के तालमेल का विकास होने के बाद ही एक बच्चा वस्तुओं तक पहुँच सकता है और उन्हें पकड़ सकता है।

- यह एक साकल्यवादी प्रक्रिया (holistic process) (और अवधारणा) है और यह विखंडित प्रक्रिया नहीं है। विकास की सभी अवस्थाएँ (षारीरिक, संज्ञानात्मक और मनोसामाजिक) परस्पर संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, भाषा का विकास एक ऐसा विषय है जो किसी न किसी प्रकार इन सभी अवस्थाओं से जुड़ा है।

- विकासः बच्चे को परायत्तता (परतंत्रता) से स्वायत्तता की ओर ले जाता है। इसका अर्थ है कि जैसे–जैसे बच्चा विकास करता है, दूसरों पर उसकी निर्भरता कम हो जाती है।

- इससे जटिलता (complexity) और विविधता (variety) उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है, वह छोटी आयु की अपेक्षा जटिल समस्याओं का समाधान अधिक सहजता के साथ करने में सफल होता है। जैसे–जैसे मानव विकास करते हैं, वैसे–वैसे आवष्यकताओं, व्यवहार, अभिवृत्ति (दृष्टिकोण), रूचियों आदि के संबंध में भेद की अत्यधिक मात्रा उत्पन्न होती है।

- ऐसी भिन्न–भिन्न गतियाँ हैं जिन पर लोग पूरे विष्व में विकास करते हैं। विभिन्न संस्कृतियाँ, समाजीकरण (socialization) के विभिन्न स्वरूप, पोषण, स्वास्थ्य और षिक्षा, भेजन की आदतें, जलवायु संबंधी दषाएँ और बुनियादी कारक मानव जीवन में विविधता और विकास लाते हैं।

- विशेष आवष्यकताओं वाले बच्चों के मामले में विकास को बहुत अलग से समझने की आवष्यकता हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः क) अपने उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तर को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिलाइए।

7) विकास के विषय में कुछ सामान्य विचार लिखें।

....

....

....

....

....

अध्यापकों के रूप में हम उन विद्यार्थियों के साथ काम करेंगे जो अलग हैं तथा बड़े हो रहे हैं, सीख रहे हैं और विकसित हो रहे हैं। विकास की ये जानकारियाँ कक्षाकक्ष और अध्यापक के रूप में हमारे कार्य को समझने में सहायता करेंगी। परंतु हमें यह भी मान लेना चाहिए कि बच्चों और उनके विकास को समझने का कोई एक तरीका नहीं है। प्रत्येक अध्यापिका संदर्भ और स्थिति जिसमें वह कार्य करती है, उन अनुभवों के आधार पर विभिन्न जानकारियों को विकसित करती है। आषा की जाती है कि यहाँ दिए गए स्पष्टीकरण उसे अपने अनुभव का विश्लेषण करने में सहायता करेंगे। आगामी इकाइयाँ इस इकाई पर आधारित है जिनमें विकास के विभिन्न पहलुओं को थोड़ा विस्तार से स्पष्ट किया जाएगा।

5.8 सारांष

इस इकाई में हमने मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के बारे में जाना। एक अध्यापक के लिए बाल्यावस्था की अवधारणाओं को समझने की आवष्यकता के बारे में समझा। बाल्यावस्था में हमारा विकास कैसे होता है और बच्चों के मध्य किस–किस प्रकार की विशेषताएँ प्रस्फुटित होती हैं। हमने बाल विकास का अर्थ और अध्यापकों के लिए उसकी प्रासंगिकता को जानने का प्रयास किया। विकास के विभिन्न आयामों तथा वृद्धि एवं विकास के मध्य अंतर को समझने की कोषिष की। हमें इस इकाई में वर्णित विकास से संबंधित अलग–अलग बहसों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त विकास की मुख्य विशेषताओं को हमने समझने की कोषिष की और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विकास एक निरंतर प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु तक अनवरत् चलती रहती है।

5.9 इकाई के अंत में अभ्यास

1) इस इकाई के भाग 5.1 में तीन अध्यापिकाओं आषा, सरोज और समीन ने एक–दूसरे को अपने–अपने अनुभव बताए। उसी रूप में कक्षाकक्ष अनुभव का वर्णन कीजिए। आप अपने कक्षाकक्ष में एक विशेष दिन अथवा आपके समक्ष आई किसी स्थिति विशेष की चर्चा कर सकते हैं।

2) एक अध्यापक के रूप में इस इकाई का अध्ययन आपकी सहायता करेगा, आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

3) जिन बच्चों को आप पढ़ाते हैं, उनकी वृद्धि के अपने अनुभवों और उनके साथ प्राप्त अनुभवों के आधार पर 'बाल्यावस्था का अनुभव करना' विषय पर एक लघु निबंध लिखिए।

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) नहीं, क्योंकि बच्चे और बाल्यावस्था के बारे में अलग–अलग और परस्पर विरोधी परिप्रेक्ष्य हैं। बाल्यावस्था के संदर्भ में कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। विभिन्न नागरिकताओं में विभिन्न समयों पर बचपन को अलग–अलग नजरिये से देखा गया है। ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि हमें हमेषा वयस्कों के चष्मे से देखा गया है।

2) ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में बाल्यावस्था की अवधारणा

   विभिन्न समुदायों में बाल्यावस्था की अवधारणा

3) हाँ, समाजीकरण की प्रक्रिया में, आदतें, सहगामी संबंध आदि

4) नहीं, पैर में चोट हमेषा के लिए नहीं है। कुछ दिनों के बाद सुधार संभव है, अतः यह परिवर्तन विकास नहीं है।

5) अधिगम केवल विकास से संबंधित हैः

   i) अधिगम विकास की ओर अग्रेसित है।

   ii) विकास, अधिगम हेतु परिस्थितियाँ निर्माण कर सकता है।

6) निम्नलिखित शामिल हैंः

   i) यह क्रमिक व सीधी प्रक्रिया है।

   ii) यह संपूर्ण प्रक्रिया है।

   iii) यह बहुलतावाद से एकात्मकतावाद की ओर बच्चे को ले जाती है।

   iv) यह जटिलताओं से विविधता की ओर जाती है।

   v) विकास की गतियाँ भिन्न होती हैं।

   vi) विशेष आवष्यकता वाले बच्चों में विकास अलग तरह से होता है।

5.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एरीज, फिलिप, (1962), *सेंचुरीज ऑफ चाइल्डहुड,* न्यूयार्कः विन्टेज बुक्स।

वर्क. ई. ल्यूरा (2006), *चाइल्ड डेवलेपमेंट,* (सातवाँ संस्करण), दिल्लीः पियरसन प्रिटिंस हॉल।

हॉल्ट, जॉन, (1972), *इस्केप फ्रॉम चाइल्डहुड,* भोपाल, एकलव्य।

वुलफ्लॉक, अनीता, (2004), *एजुकेषनल सायकोलॉजी,* दिल्लीः पियरसन प्रिटिंस हॉल।